

नारी सशक्तिकरण

सशक्त नारी, सशक्त समाज

रूपरेखा

1. प्रस्तावना · 2. भारतीय समाज में नारी की स्थिति : अतीत · 3. स्वतंत्र भारत में बदलाव · 4. सशक्तिकरण के आधार स्तंभ · 5. आज की चुनौतियाँ · 6. सरकार और समाज की भूमिका · 7. उपसंहार

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: — जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

— मनुस्मृति

प्रस्तावना

किसी भी समाज की प्रगति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वहाँ महिलाओं की स्थिति कैसी है। नारी केवल परिवार की धुरी नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण की समान भागीदार है। नारी सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने का समान अधिकार देना, ताकि वे अपना जीवन अपनी इच्छा और क्षमता के अनुसार जी सकें।

भारतीय समाज में नारी की स्थिति : अतीत

वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा और धार्मिक कार्यों में समान अधिकार प्राप्त थे। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों के नाम आज भी आदर से लिए जाते हैं। परंतु समय के साथ समाज में अनेक कुरीतियाँ आई — बाल-विवाह, पर्दा प्रथा, दहेज और स्त्री-शिक्षा पर रोक — जिनसे नारी की स्थिति कमजोर होती चली गई।

उन्नीसवीं सदी में राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और सावित्रीबाई फुले जैसे समाज-सुधारकों ने इन कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। सावित्रीबाई फुले ने बालिकाओं के लिए विद्यालय खोलकर स्त्री-शिक्षा की नई राह दिखाई।

स्वतंत्र भारत में बदलाव

स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने स्त्री और पुरुष को समान अधिकार दिए। मतदान का अधिकार, समान कार्य के लिए समान वेतन और लिंग के आधार पर भेदभाव पर रोक जैसे प्रावधानों ने महिलाओं को नई शक्ति दी।

आज महिलाएँ विज्ञान, खेल, सेना, प्रशासन, राजनीति और व्यापार — हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। गाँवों की पंचायतों में भी बड़ी संख्या में महिलाएँ नेतृत्व कर रही हैं।

सशक्तिकरण के आधार स्तंभ

नारी सशक्तिकरण कई स्तंभों पर टिका है, जो एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

- शिक्षा — शिक्षित नारी पूरे परिवार को शिक्षित करती है।
- आर्थिक आत्मनिर्भरता — अपनी आय होने से निर्णय लेने का आत्मविश्वास बढ़ता है।
- स्वास्थ्य और पोषण — स्वस्थ माँ ही स्वस्थ पीढ़ी को जन्म देती है।
- सुरक्षा और सम्मान — घर, विद्यालय और कार्यस्थल पर भयमुक्त वातावरण।
- निर्णय में भागीदारी — परिवार से लेकर संसद तक बराबर की आवाज़।

आज की चुनौतियाँ

इतनी प्रगति के बावजूद अनेक चुनौतियाँ अभी शेष हैं। कई क्षेत्रों में आज भी बेटियों को बेटों जितनी शिक्षा और अवसर नहीं मिलते। दहेज, घरेलू हिंसा और कार्यस्थल पर भेदभाव जैसी समस्याएँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं।

घर और नौकरी दोनों की ज़िम्मेदारी का दोहरा बोझ भी कामकाजी महिलाओं के लिए बड़ी चुनौती है। इन समस्याओं का समाधान केवल कानून से नहीं, बल्कि सोच में बदलाव से होगा।

सरकार और समाज की भूमिका

सरकार ने बालिका शिक्षा, मातृ-स्वास्थ्य, स्वयं-सहायता समूहों और महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ चलाई हैं। परंतु असली परिवर्तन तब आएगा जब हर परिवार बेटी के जन्म को उत्सव की तरह मनाएगा और उसे पढ़ने-बढ़ने का पूरा अवसर देगा।

पुरुषों की भी इसमें बड़ी भूमिका है। घर के कामों में बराबर हाथ बँटाना और बेटियों की बात को महत्व देना सशक्तिकरण की दिशा में सबसे सरल और प्रभावी कदम है।

एक प्रेरक उदाहरण

हमारे शहर की एक स्वयं-सहायता समूह की महिलाओं ने मिलकर अचार और पापड़ का छोटा व्यवसाय शुरू किया। आज वे अपने बच्चों की पढ़ाई का पूरा खर्च स्वयं उठाती हैं। (काल्पनिक उदाहरण)

उपसंहार

नारी सशक्तिकरण किसी एक वर्ग का विषय नहीं, बल्कि पूरे समाज की प्रगति का प्रश्न है। जब नारी सशक्त होती है तो परिवार समृद्ध होता है, समाज संतुलित होता है और राष्ट्र प्रगति के पथ पर तेज़ी से आगे बढ़ता है।

आइए, हम ऐसा भारत बनाएँ जहाँ हर बेटी निडर होकर सपने देख सके और उन्हें पूरा कर सके।